अध्याय 27

भारत में जनजातियाँ

इस अध्याय में आप सीखेंगे कि:

- भारत में जनजातियों का विस्तार, उनकी विशेषताएं, अभिलक्षण एवं उनका सामाजिक, आर्थिक जीवन कैसा है।
- जनजातियों की उत्पत्ति, उद्भव और विकास किन परिस्थितियों में हुआ और इन जनजतियों का भारत की सामाजिक पारिस्थितियों में इतना महत्व क्यों है।
- वर्तमान काल में इन लोगों की आजीविका और रहन-सहन में किस प्रकार बदलाव आया।
- भारत के भूगोल से संबंधित विभिन्न प्रकार के तथ्यात्मक एवं सूचनात्मक ज्ञान के बारे में जानेंगे।
- भारत के परंपरागत एवं नवीन तथ्यों के बारे में जानेंगे जैसे कच्छ वनस्पति (मैंग्रोव) आवरण, वनों के प्रकार, भारत की जनजातियाँ एवं जनजातियों के क्षेत्र।

जनजातियाँ (Tribes)

भारत की जनजातियाँ ही यहाँ की आदिवासी तथा मूलत: निवास करने वाली जनसंख्या का प्रतिनिधित्व करती हैं। इनके जीवन यापन का ढंग वर्तमान में भी प्राचीन पद्धतियों से ही संचालित होता आ रहा है।

जनजातियों की दृष्टि से भारत को अत्यंत समृद्ध माना जाता है यहाँ जनजातियों की बहुलता है। कुछ जनजातियों ने स्थायी ढंग से कृषि, पशुपालन आदि कार्यों में रूचि लेना प्रारम्भ कर दिया है, किन्तु अधिकांश जनसंख्या शिकार करने, मछली पकड़ने, लकड़ी काटने आदि कार्यों द्वारा ही जीवन-निर्वाह करती है। भारतीय जनजातियों को विद्धानों द्वारा अलग-अलग नामों से संबोधित किया गया है। वे इन्हें आदिवासी, पहाड़ी जनजातियाँ, जंगली आदिवासी, प्राचीन जनजाति, जंगल निवासी, पिछड़ा हिन्दू, विलीन मानवता आदि नामों से पुकारते हैं। भारतीय संविधान में इन्हें 'अनुसूचित जनजाति' कहा गया (अनुच्छेद-342) है जबकि वर्तमान में इनको आदिवासी, वन्यजाति, गिरिजन आदि अनेक नामों से जाना जाता है।

भारतीय जनगणना—अनुसूचित जनजाति

- जनगणना 2011 के अंतिम आंकड़ों के अनुसार देश में अनुसूचित जनजाति के व्यक्तियों की कुल संख्या – 10.43 करोड़
- जनगणना 2011 के अंतिम आंकड़ों के अनुसार देश की कुल जनसंख्या में अनुसूचित जनजाति का प्रतिशत – 8.6% (जनगणना 2001 में यह प्रतिशत 8.2 था)
- 2001-2011 के दौरान देश में अनुसूचितत जनजातियों की दशकीय वृद्धि दर – 23.7%

अनुसूचित जनजातियों

- देश की जनजातीय जनसंख्या के वितरण को 3 मुख्य क्षेत्रों में विभक्त किया गया है—
  1. उत्तरी एवं उत्तरी-पूर्वी प्रदेश
  2. मध्यवर्ती क्षेत्र
  3. दक्षिणी क्षेत्र

1. **उत्तरी एवं उत्तरी-पूर्वी प्रदेश**—इसमें हिमालय के तराई क्षेत्र, उत्तरी-पूर्वी सीमान्त पहाड़ियाँ, तिस्ता तथा ब्रह्मपुत्र नदी की घाटियाँ आदि सम्मिलित है। इसके अन्तर्गत असम, अरूणांचल प्रदेश, नागालैण्ड, मेघालय, मिजोरम, मणिपुर, त्रिपुरा आदि राज्यों की जनजातियाँ आती है।
2. **मध्यमवर्ती क्षेत्र**—इसके अन्तर्गत प्रायद्वीपीय भारत के पठारी तथा पहाड़ी क्षेत्र सम्मिलित किये जाते हैं। देश की लगभग 80% जनजातीय जनसंख्या, इसी क्षेत्र में निवास करती है। मध्य प्रदेश दक्षिण राजस्थान, आन्ध्र प्रदेश, दक्षिणी उत्तर प्रदेश, गुजरात, बिहार, ओडिशा आदि राज्य इसी क्षेत्र में आते हैं।
3. **दक्षिणी क्षेत्र**—दक्षिणी क्षेत्र के अन्तर्गत आन्ध्र प्रदेश, कर्नाटक, केरल व तमिलनाडु के जनजातीय क्षेत्र शामिल हो यह भारतीय जनजातियों के सबसे प्राचीन स्वरूप का प्रतिनिधित्व करता है।

इन 3 प्रमुख क्षेत्रों के अतिरिक्त अण्डमान-निकोबार द्वीप समूह में भी एकांकी रूप से कुछ विशिष्ट जनजातियों जैसे—ओंगे, जारवा, सेंटेलीरू ग्रेटं, निकोबारी और योम्पेन आर्य भी पायी जाती है।

तालिका 27.1: भारत की प्रमुख जनजातियाँ

जनजाति का नाम	निवास स्थान	महत्वपूर्ण तथ्य
गोंड (Gond)	• इन जनजातियों का मूल निवास स्थल छत्तीसगढ़ प्रांत का बस्तर संभाग माना जाता है। किन्तु इसके अलावा झारखण्ड, पश्चिम बंगाल, कर्नाटक, आंध्र प्रदेश, महाराष्ट्र एवं उड़ीसा में भी यह जनजाति पायी जाती है।	• भारत में गोंड जनजाति के सदस्यों की संख्या सबसे ज्यादा होने के कारण इसे सबसे बड़ा जनजातीय समूह माना जाता है। • प्राचीनकाल में इस जनजाति के सदस्यों का फैलाव अत्यंत विस्तृत था और इनके फैलाव क्षेत्र को गोंडवाना लैंड के नाम से पुकारा जाता था। • गोंड जनजाति के परिवारों में पितृसत्ता की प्रधानता पायी जाती है। • बस्तर संभाग में इस जनजाति को प्रजा, मुड़िया अथवा मड़िया नाम से संबोधित किया जाता है। • ज़रिया का मुख्य जरिया वन्य उपज, पशु पालन एवं कृषि है। ये लोग कुटीर उद्योग भी चलाते हैं। • गांव स्तर पर इन पंचायतों के मुखिया को 'मुकद्दम' कहा जाता है। • इस जनजाति के लोगों का विश्वास जादू-टोना पर अधिक होता है। • इस जनजाति समूह की प्रजाति द्रविड़ तथा भाषा गोंडी है।
भील (Bhil)	• भील जनजाति के मध्य प्रदेश, छत्तीसगढ़, राजस्थान पूर्वी गुजरात एवं महाराष्ट्र में अधिक है।	• तमिल भाषा के 'बिल्लवर' शब्द से भील शब्द की व्युत्पत्ति हुई है। बिल्लवर का शाब्दिक अर्थ धनुर्धारी होता है। • महाभारत के पात्र एकलव्य का संबंध इसी जनजाति से था। • भील जनजाति के परिवारों में पितृसत्ता की प्रधानता देखने को मिलती है। • ये जनजाति भिल्ली नामक बोली का प्रयोग करते हैं।

(Continued)

जनजाति का नाम	निवास स्थान	महत्वपूर्ण तथ्य
		• द्रविड़ प्रजाति के भीलो की गहरी आस्था अपने पूर्वजों की आत्माओं को पूजते भी हैं।
		• इनके जीवकोपार्जन का मुख्य आधार कृषि एवं वन्य उपज होती है। • भीलों में गोत्र परंपरा प्रचलित है। • बांस तथा मिट्टी से निर्मित इनके घर आयताकार होते हैं, जिन्हें 'कू' (Koo) कहा जाता है। • इनमें धार्मिक अनुष्ठान के रूप में आम का पेड़ लगाए जाने का प्रचलन है। • रक्षाबंधन के पर्व पर भील अपने धनुष-बाण एवं उपकरणों की पूजा करते हैं। • इनकी जाति का मुखिया 'कोतवाल' कहलाता है।
संथाल (Santhal)	• संथाल जनजाति का मूल निवास स्थल झारखंड का संथाल एवं 24 परगना पश्चिम बंगाल माना जाता है। • इसके अतिरिक्त बिहार, उड़ीसा, मध्य प्रदेश व असम में भी निवास करते हैं।	• संथाल परगना क्षेत्र में निवास करने के कारण यह जनजाति संथाल कहलाई। • यह जनजातीय समूह संथाली भाषा का प्रयोग करता है। तथा 'ठाकुर' नामक देवता की पूजा करता है। • इस जनजातीय समूह के जीवकोपार्जन का मुख्य आधारकृषि एवं वन उपज है। • जिन आयताकार झोपड़ियों में ये निवास करते हैं, उन्हें 'बांग्ला ओराक' कहते हैं। • संथालों के समाज में मुख्य व्यक्ति इनका सरदार होता है। आदिवासी समूहों की तरह जादू होना प्रचलित हैं इनके विवाह को 'बापला' कहा जाता है। • ये सरना धर्म का पालन करते हैं। • इनकी भाषा संथाली और लिवि ओल्चिकी है।
टोडा (Toda)	• ये दक्षिण भारत के नीलगिरि पर्वतों की जनजाति है।	• इस जनजाति की आस्था से जुड़ा पवित्र वृक्ष टुंडू है। इसी वृक्ष से जुड़ाव के कारण इस जनजाति का नामकरण 'टोडा' पड़ा। • इनके निवास स्थल को टोड़ा कहा जाता है। • इनमें बहुपति प्रथा प्रचलित है। • इनके जीवकोपार्जन का मुख्य आधार पशुपालन है। इसलिए इनमें भैंस पूजा का प्रचलन है। • ये तमिल तथा कन्नड़ की मिश्रित भाषा का प्रयोग करते हैं।

(Continued)

जनजाति का नाम	निवास स्थान	महत्वपूर्ण तथ्य
खासी (Khasi)	• मेघालय प्रांत के संयुक्त खासी और जयन्तिया के पहाड़ी जिलों में इस जनजाति का निवास है।	• भारत की यह मातृवंशीय जनजाति अन्य जनजातियों की तरह पिछड़ी नहीं है। शैक्षिक, सामाजिक एवं आर्थिक स्तरों पर उन्नतशील होने के कारण यह विशिष्ट हो चुकी है। तथा इन्हें आदिम नहीं कहा जाता है। • खासी जनजाति जंगलों से निकलकर नगरीकरण का हिस्सा बन चुकी है तथा आर्थिक व शैक्षिक स्तरों पर खुद को सुदृढ़ बना चुकी है। • खासी जनजाति के परिवारों में छोटी पुत्री का विशेष मान-सम्मान होता है और वह सम्पत्ति की उत्तराधिकारिणी होती है। • इस जनजाति में झूम कृषि का प्रचलन है।
मुण्डा (Munda)	• यह जनजाति मुख्य रूप से झारखण्ड, प. बंगाल	• इस जनजाति में हलचर, गरम-धाम, सरहुल एवं माहोपरब नामक उत्सव त्योहार के रूप में मनाए जाते हैं। • जनजाति के पूज्य देव 'सिंगबोंगा' कहलाते हैं।
थारू (Tharu)	• उत्तर प्रदेश के तराई व पहाड़ी क्षेत्रों तथा उत्तराखण्ड में यह जनजाति मुख्य रूप से निवास करती है।	• इस जनजाति के जीवकोपार्जन का मुख्य आधार मछली मारना, पशुपालन एवं कृषि है। • इस जनजाति की प्रमुख विशिष्टता है बदला विवाह प्रथा। अर्थात् विवाह के लिए ये बदले ये अपनी बहन प्रदान करते हैं। इनमें संयुक्त परिवार प्रथा प्रचलित है। • हिन्दू धर्म को मानने वाली इस जनजाति में जहाँ पंचायती व्यवस्था का प्रचलन है, वहीं अंधविश्वासों की भरमार है। • थारूओं का समाज स्त्री प्रधान होता है। समाज में स्त्रियों को अधिक महत्व दिया जाता है। • इस जनजाति की सर्वप्रमुख विशेषता यह है कि ये दीपावली को 'शोक पर्व के रोष' में मनाते है।
भोटिया (Bhotia)	• ये उत्तराखण्ड में निवासित जनजाति है।	• इस जनजाति के लोग 'भोट' क्षेत्र में रहने के कारण भोटिया कहलाते हैं। • इस जनजाति की प्रमुख विशिष्टता यह है कि इसमें विवाह के समय वर-विहीन वर यात्रा का प्रचलन है। अर्थात नाते-रिश्तेदार व इष्ट मित्र आदि बाराती बन कर जाते हैं। और वधू को ले आते हैं। विवाह की यह पद्धति 'सुरोल विवाह' कहलाती है।

(Continued)

जनजाति का नाम	निवास स्थान	महत्वपूर्ण तथ्य
		• इस जनजाति के सदस्य व्यापारिक गतिविधियों के जरिए जीवकोपार्जन करते हैं। • इस जनजाति में पितृसत्ता की प्रधानता देखने को मिलती है। • अंधविश्वासों का प्रचलन पाया जाता है। • भोटिया जनजाति में ऋतु प्रवास (Seasonal Migration) का चलन है।
बुक्सा (Buxa)	• ये उत्तराखण्ड में निवासित जनजाति है।	• इस जनजाति में पितृसत्ता की प्रधानता होती है और विवाह के लिए वधू का मूल्य लिया जाता है। जिसे हम विवाह की 'क्रय-पद्धति' से जोड़कर देख सकते हैं।
जौनसारी (Jaunsari)	• ये उत्तराखण्ड में निवासित जनजाति है।	• यह उत्तराखण्ड की सबसे बड़ी जनजाति के रूप में चिन्हित की गयी है। • इस जनजाति में बहुपति एवं बहुपत्नी प्रथा का व्यापक प्रचलन देखने को मिलता है। • इनके समाज में अंधविश्वास की जड़े अत्यंत गहरी हैं। • ये महाभारत के पांडवों को अपना पूज्य मानते हैं। तथा अपने गांवों में इनके मंदिर की स्थापना करते हैं। • यह जनजाति कृषि कार्य में संलग्न है।
नागा (Naga)	• इस जनजाति का संकेन्द्रण मुख्य रूप से नागालैण्ड के पहाड़ी क्षेत्रों में है, इसके अलावा मणिपुर, एवं मिजोरम के पठारी भागों, पटकोइ, पहाड़ियों तथा असम व अरूणाचल के कुछ क्षेत्रों में भी पायी जाती हैं।	• यह उत्तराखंड की सबसे बड़ी जनजाति के रूप में। • इस जनजाति के जीवकोपार्जन का मुख्य आधार कृषि, आखेट, मृत्स्य एवं पशुपालन एवं कुटीर उद्योग है। • ये स्थानांतरी कृषि (झूम खेती) करते हैं। • इस जनजातियों में संयुक्त परिवार की प्रथा का चलन है। • इस जनजाति में अंधविश्वास की जड़ें अत्यंत गहरी हैं। • इस जनजाति के सदस्यों द्वारा ईसाई मिशनरियों के संपर्क में आकर धर्म परिवर्तन किया जाता रहा है। • नागा जनजाति के विवाह समारोह में पुरूष को नरमुंडों की माला पहनाकर शौर्य प्रदर्शन करना पड़ता है।

(Continued)

जनजाति का नाम	निवास स्थान	महत्वपूर्ण तथ्य
गद्दी (Gaddie)	• इस जनजाति के सदस्यों का संकेन्द्रण मुख्य रूप से हिमांचल प्रदेश में हिमालय की धौलाधार तथा पीरपंजाल पर्वत श्रेणियों के मध्यवर्ती क्षेत्र में स्थित नदी घाटियों एवं कटकों में है। इनका फैलाव चंबा, कांगड़ा एवं लाहौल जनपदों के ऊंचे पर्वतीय क्षेत्रों में अधिक है।	• इस जनजाति की जीविका कृषि, पशुपालन एवं केवल बुनाई पर निर्भर करती है। • ये ऋतु प्रवास करते है अर्थात् शीत ऋतु में जहाँ घाटियों के निम्न स्थानों पर प्रवास करते हैं, ग्रीष्म ऋतु में पहाड़ी ढालों पर निवास करने चले जाते हैं। • इस जनजाति की दो प्रमुख विशेषताएं हैं पहली, ये सदैव बांसुरी साथ में लेकर चलते हैं और दूसरी, इनमें बहुपति प्रथा का चलन है। • हिन्दू धर्म को मानने वाले गद्दी शिव की उपासना करते हैं।
मीणा (Mina)	• भारत के राजस्थान राज्य में निवास करने वाली एक जनजाति है।	• वेद पुराणों के अनुसार मीणा जातिमत्स्य (मीना) भगवान की वंशज है। • पुराणों के अनुसार चैत्र शुक्ल तृतीय को कृतमाला नदी के जल से मत्स्य भगवान प्रकट हुए थे। इस दिन को मीणा समाज, जहां एक ओर मत्स्य जयन्ती के रूप में मनाता है वहीं दूसरी ओर इसी दिन सम्पूर्ण राजस्थान में गणगौर का त्योहार मनाया जाता है। • प्राचीन ग्रंथो में मत्स्य जनपद का स्पष्ट उल्लेख है, जिसकी राजधानी विराट नगर थी, जो अब जयपुर वैराठ है।

ध्यातव्य हो कि

भारत की सर्वाधिक आद्य जनजाति 'जाएगा' मानी जाती है।

भारतीय जनजातियों से संबंधित महत्वपूर्ण तथ्यः

- भारतीय जनजातियों के उत्थान के लिए वर्ष 1974 में 'The Tribe Sub Plan–TSP' तैयार किया गया। इसका मुख्य उद्देश्य कृषि, भूमि सुधार, जल विभाजक विकास, मृदा आर्द्रता संरक्षण, पशुपालन, वन तथा ग्रामीण क्षेत्रों में सुधार करके जनजातियों के जीवन स्तर को ऊपर उठाना है। इसमें जनजातियों की जनसंख्या के अनुपात में धनराशि आवंटन की व्यवस्था भी सुनिश्चित की गई। Tribe Sub Plan 'एकीकृत जनजातीय विकास योजना' (Integrated Tribe Development Plan) भी कहते हैं।
- ट्राईफेड (Tribal Cooperation Marketing Development of India–TRIFED) की स्थापना अगस्त, 1987 में कल्याण मंत्रालय के अंतर्गत किया गया। इसका उद्देश्य आदिवासियों की लघु वन उपज व अधिशेष कृषि उपज के व्यवसाय को संस्थागत बनाकर आदिवासियों का आर्थिक विकास करना है। क्योंकि इनका जीवन प्राकृतिक उत्पादों पर निर्भर करता है। अर्थात् ट्राइफेड जनजातियों को आर्थिक शोषण से बचाने के उद्देश्य से स्थापित किया गया।
- भारत सरकार के जनजातीय मामलों के मंत्रालय द्वारा 'राष्ट्रीय जनजातीय नीति' का प्रारूप तैयार किया जाता है।

ध्यातव्य हो कि

अंडमान व निकोबार द्वीप की जनजाति समूह

जनजाति	द्वीप समूह
ओंगे (Onge)	लघु अंडमान में निवासित
सेंटेलीज (Sentinelese)	सेंटीनेल द्वीप में निवासित
जारवा (Jarawa)	मध्य व दक्षिण अंडमान में निवासित
शोम्पेन (Shompen)	ग्रेट निकोबार
ग्रेट अंडमानी (the Great Andamanese)	ग्रेट निकोबार

- भारतीय संविधान के अनुच्छेद 342 का संबंध अनुसूचित जनजातियों से है। इस अनुच्छेद के अनुसार राष्ट्रपति, किसी राज्य या संघ राज्य क्षेत्र में, राज्य के राज्यपाल से परामर्श के पश्चात् लोक अधिसूचना द्वारा उन जनजातियों या जनजाति समुदायों या उन भागों को विनिर्दिष्ट कर सकेगा, जिन्हें अनुसूचित जनजाति समझा जाएगा। संसद विधि द्वारा इस सूची में परिवर्तन कर सकेगी।
- अनुच्छेद 366 (26) में 'जनजाति' को स्पष्ट किया गया है।
- संविधान की 5वीं अनुसूची में अनुसूचित क्षेत्रों और अनुसूचित जनजातियों के प्रशासन एवं नियंत्रण के बारे में उपबंध है।
- भारत की सबसे बड़ी जनजाति गोड हैं।

जनजातियों के प्रमुख नृत्य
(Famous Tribal Dance Forms)

शिकार नृत्य

जनजाति—नागा, खासी, थारू एवं जयंतिया।

नृत्य की विशेषता—यह नृत्य जनजातियों द्वारा शिकार की खुशी में किया जाता है।

युद्ध नृत्य

जनजाति—छोटा नागपुर की जनजातियों द्वारा, उराव, गारो एवं भील जनजातियों द्वारा।

नृत्य की विशेषता—जनजातियों द्वारा शिकार पर जाने से पूर्व यह नृत्य किया जाता है। इस दौरान शिकार के लिए प्रयोग में लाए जाने वाले हथियारों के साथ उल्लासपूर्वक नृत्य किया जाता है।

जादुर नृत्य

जनजाति—उरांव जनजाति

नृत्य की विशेषता—इस जनजाति के स्त्री-पुरूष मिलकर यह नृत्य बसंत ऋतु के आगमन पर करते हैं इस अवसर पर उरांव जनजाति के सदस्य रंग-बिरंगे परिधान धारण करते हैं।

ताड़ी नृत्य

जनजाति—मुख्य रूप से संथाल जनजाति द्वारा।

नृत्य की विशेषता—उमंग व उल्लास का नृत्य है।

अध्याय सार संग्रह

- जनगणना 2011 के अनुसार भारत की कुल जनसंख्या में अनुसूचित जन जाति का कुल प्रतिशत = 8.6%
- 2001 से 2011 के बीच अनुसूचित जनजातियों की कुल दशकीय वृद्धि दर = 23.7%
- भारत की 20% जनजातियाँ निवास करती हैं—भारत के मध्यवर्ती क्षेत्र में
- भारत की सबसे बड़ी जनजाति है—गोंड
- गोंड जनजाति का प्रमुख निवास स्थान है—बस्तर सम्भाग (छत्तीसढ़)
- महाभारत के पात्र एकलव्य का सम्बन्ध था— भील जनजाति से
- बांस तथा मिट्टी से निर्मित घर जिसे 'कू' कहा जाता है यह निर्मित किया जाता है—भीलों द्वारा
- बापला किसके विवाह को कहा जाता है—संथाल
- नीलगिरि पहाड़ी पर निवास करने वाली जनजाति है—टोडा
- शैक्षिक, सामाजिक, एवं आर्थिक रूप से है—खासी
- झूम कृषि का प्रचलन प्रमुख रूप से है—खासी
- दीपावली को शोक वर्ष के रूप में मानाया जाता है—थारू में
- सुरोल विवाह पद्धति प्रचलित है—भोटिया में
- महाभारत के पाण्डवों को पूज्य मानने वाली जनजातियाँ—घौनसारी

भारत की प्रमुख जनजातियाँ

जनजातियाँ	विस्तार	मुख्य विशेषता
• थारू	नैनीताल से लेकर गोरखपुर एवं तराई क्षेत्र में (उत्तराखण्ड व उत्तरप्रदेश)	संयुक्त परिवार की प्रथा है।
• बुक्सा	उत्तराखण्ड के नैनीताल, पौड़ी गढवाल, देहरादून जिलों में	हिन्दी भाषा बोलते है और हिन्दुओं की तरह इसमें अनुलोम व प्रतिलोम विवाह प्रचलित है।
• राजी अथवा बनरौत	-	उत्तराखण्ड के पिथौरागढ़ जनपद में ये हिन्दू है और झूमिंग प्रथा से कृषि करते है।
• खरवार	उत्तरप्रदेश के मिर्जापुर जिले में	खूंखार व बलिष्ठ जनजाति।
• जौनसारी	उत्तराखण्ड के देहरादून, टेहरी-गढ़वाल, उत्तरकाशी क्षेत्र में	बहुपति विवाह प्रथा पायी जाती है।
• भोटिया	उत्तराखण्ड के अल्मोढ़ा, चमोली, पिथौरागढ़ व उ.काशी में	ये जनजाति मंगोल प्रजाति की है।